

दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनांक: 25-06-2025

विषय सूची

- » बांग्लादेश, चीन और पाकिस्तान के साथ त्रि-राष्ट्र बैठक में सम्मिलित हुआ
- » भारत-दक्षिण अफ्रीका ने पनडुब्बी सहयोग के क्षेत्र में समझौतों का आदान-प्रदान किया
- » नीति आयोग ने सुदृढ़ डेटा इकोसिस्टम पर बल दिया
- » RBI और बैंक डिजिटल भुगतान इंटेलेजेंस प्लेटफॉर्म लॉन्च करेंगे (DPIP)
- » वैश्विक सतत विकास लक्ष्य रैंकिंग में भारत शीर्ष 100 में पहुंचा
- » जलवायु वित्त

संक्षिप्त समाचार

- » अनंतपद्मनाभ मंदिर में 15वीं शताब्दी के प्राचीन दीपक की खोज
- » उन्नत रॉक अपक्षय (ERW) तकनीक
- » संसद की लोक लेखा समिति(PAC)
- » EPFO ऑटो क्लेम सीमा 1 लाख रुपये से बढ़ाकर 5 लाख रुपये की गई
- » कैंडिडा ट्रॉपिकलिस
- » नोवो नॉर्डिस्क का वेगोवी

बांग्लादेश, चीन और पाकिस्तान के साथ त्रि-राष्ट्र बैठक में सम्मिलित हुआ

संदर्भ

- बांग्लादेश, चीन और पाकिस्तान ने कुनमिंग में आयोजित 9वें चीन-दक्षिण एशिया एक्सपो और 6वीं चीन-दक्षिण एशिया सहयोग बैठक के मौके पर एक अनौपचारिक त्रिपक्षीय बैठक की।

बैठक के बारे में

- तीनों देशों ने आपसी विश्वास, समझ और क्षेत्र में शांति, समृद्धि एवं स्थिरता की साझा दृष्टि के आधार पर विचारों का आदान-प्रदान किया।
- उन्होंने सहयोग के प्रमुख क्षेत्रों की पहचान की, जिनमें बुनियादी ढांचा, संपर्क, व्यापार, निवेश, स्वास्थ्य सेवा, कृषि, समुद्री मामलों, सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (ICT), आपदा तैयारी और जलवायु परिवर्तन शामिल हैं।

एक-दूसरे के पास आने के कारण

- चीन के रणनीतिक हित:**
 - बीआरआई विस्तार:** चीन दक्षिण एशिया में अपने बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) के प्रभाव को गहरा कर रहा है, जिससे वह क्षेत्रीय देशों को बुनियादी ढांचे और व्यापार परियोजनाओं के माध्यम से जोड़ रहा है।
 - इंडो-पैसिफिक रणनीति का मुकाबला:** यह त्रिपक्षीय गठबंधन क्वाड (भारत, अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया) और इंडो-पैसिफिक सुरक्षा ढांचे को संतुलित करने का प्रयास माना जा सकता है।
- पाकिस्तान के उद्देश्य:**
 - क्षेत्रीय अलगाव:** पाकिस्तान क्षेत्रीय कूटनीतिक अलगाव का सामना कर रहा है और चीन को एक भरोसेमंद सहयोगी के रूप में देखता है।
 - दक्षिण एशिया में प्रभाव:** बांग्लादेश को शामिल कर पाकिस्तान एक अन्य प्रमुख दक्षिण एशियाई देश के साथ जुड़ाव बनाकर भारत के प्रभाव को कम करना चाहता है।

बांग्लादेश की संतुलित रणनीति:

- भारत और चीन के बीच संतुलन:** भारत के साथ पारंपरिक रूप से घनिष्ठ संबंधों के बावजूद, बांग्लादेश चीनी निवेश और बुनियादी ढांचा सहायता प्राप्त कर अपनी साझेदारियों में विविधता लाना चाहता है।
- आर्थिक हित:** चीन बांग्लादेश का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है और ऊर्जा व बुनियादी ढांचे में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) का प्रमुख स्रोत भी है।
- त्रिपक्षीय सहयोग के भू-राजनीतिक प्रभाव**
 - ‘महाद्वीपीय ब्लॉक’ बनाने का प्रयास:** यह त्रिपक्षीय सहयोग धीरे-धीरे दक्षिण एशिया में एक रणनीतिक ब्लॉक का रूप ले सकता है, जिसमें चीन का गहरा प्रभाव होगा — जो भारत-प्रमुख पहलों जैसे BIMSTEC और BBIN के समानांतर चलेगा।
 - चीन की समुद्री महत्वाकांक्षाएं:** यदि यह सहयोग बंगाल की खाड़ी में समुद्री मामलों तक विस्तारित होता है, तो यह भारत के समुद्री क्षेत्र में चीन की महत्वपूर्ण उपस्थिति को दर्शाएगा।
 - SAARC की प्रासंगिकता में कमी:** भारत-पाकिस्तान तनाव के कारण SAARC अप्रभावी हो गया है, और चीन अब एक चीन-केंद्रित वैकल्पिक क्षेत्रीय प्रारूप तैयार करने का प्रयास कर रहा है।
 - रणनीतिक बुनियादी ढांचे की संभावना:** चटगांव (बांग्लादेश) और ग्वादर (पाकिस्तान) में चीन के बंदरगाह निवेश अंततः दोहरे उपयोग की सुविधाओं का समर्थन कर सकते हैं, जिससे भारत की घेराबंदी और सैन्यीकरण की आशंका बढ़ती है।

आगे की राह

- क्षेत्रीय बहुपक्षीयता:** भारत को BIMSTEC, BBIN एवं IORA जैसे उप-क्षेत्रीय समूहों को सक्रिय रूप से बढ़ावा देना चाहिए ताकि क्षेत्रीय संपर्क को बढ़ाया जा सके और चीन-केंद्रित ढांचों का मुकाबला किया जा सके।

- **पड़ोसी नीति का पुनःसंयोजन:** एक दीर्घकालिक रणनीतिक खाका जिसमें पूर्वानुमेय आर्थिक सहायता, छोटे देशों की संप्रभुता का सम्मान और सहयोगात्मक सुरक्षा तंत्र शामिल हों, चीन की लेन-देन आधारित कूटनीति का प्रभावी जवाब हो सकता है।
- भारत को अपनी समुद्री क्षेत्र जागरूकता और नौसैनिक कूटनीति को सुदृढ़ करना चाहिए। QUAD नौसैनिक अभ्यासों को सशक्त बनाना, सागरमाला एवं प्रोजेक्ट मौसमी का विस्तार करना, और हिंद महासागर के तटीय देशों (जैसे सेशेल्स, मॉरीशस, इंडोनेशिया) के साथ संबंध गहरा करना आवश्यक है।
- **पनडुब्बियों से परे साझा सुरक्षा:** ये समझौते केवल बचाव तक सीमित नहीं हैं, बल्कि प्रशिक्षण, निगरानी और संयुक्त अनुसंधान एवं विकास को भी बढ़ावा देते हैं—जो समुद्री डकैती, तस्करी एवं रणनीतिक प्रतिद्वंद्विता जैसी चुनौतियों से निपटने के लिए आवश्यक हैं।
- **रक्षा औद्योगिक विकास:** भारत की रक्षा निर्माण क्षमता दक्षिण अफ्रीका की नौसेना आधुनिकीकरण की महत्वाकांक्षाओं के साथ सामंजस्यशील है।
- **क्षेत्रीय और ऐतिहासिक महत्व:** उपनिवेशवाद विरोधी साझा इतिहास पर आधारित यह साझेदारी अब गहरी रक्षा एकीकरण की ओर बढ़ रही है।

निष्कर्ष

- चीन, पाकिस्तान और बांग्लादेश के बीच अनौपचारिक गठबंधन दक्षिण एशिया की भू-राजनीतिक संरचना को अपने पक्ष में नया आकार देने की चीन की विकसित होती रणनीति को दर्शाता है।
- भारत को एक संतुलित रणनीति के साथ जवाब देना चाहिए, जिसमें सैद्धांतिक कूटनीति, विकास-आधारित साझेदारी और मजबूत सुरक्षा उपाय शामिल हों, ताकि वह अपनी नेतृत्व भूमिका बनाए रख सके तथा क्षेत्रीय स्थिरता को बढ़ावा दे सके।

Source: AIR

भारत-दक्षिण अफ्रीका ने पनडुब्बी सहयोग के क्षेत्र में समझौतों का आदान-प्रदान किया

संदर्भ

- भारत और दक्षिण अफ्रीका ने जोहानिसबर्ग, दक्षिण अफ्रीका में आयोजित 9वीं संयुक्त रक्षा समिति (JDC) बैठक के दौरान पनडुब्बी सहयोग के क्षेत्र में दो समझौतों पर हस्ताक्षर किए।

दोनों देशों के बीच सहयोग का महत्व

- **ब्लू-वॉटर सहयोग:** भारत की गहरे समुद्र में नौसैनिक उपस्थिति को सुदृढ़ करने के लक्ष्य के लिए, दक्षिण अफ्रीका के साथ सहयोग हिंद महासागर और अटलांटिक महासागर दोनों में भारत की पहुंच को बढ़ाता है।

भारत-दक्षिण अफ्रीका संबंध

- **मित्रता का इतिहास:** भारत और दक्षिण अफ्रीका के संबंध उपनिवेशवाद और रंगभेद के विरुद्ध संघर्ष में गहराई से जुड़े हैं।
 - ▲ भारत 1946 में रंगभेदी शासन से व्यापारिक संबंध तोड़ने वाला प्रथम देश था और उसने संयुक्त राष्ट्र एवं गुटनिरपेक्ष आंदोलन में प्रतिबंध लगाने के लिए अंतरराष्ट्रीय प्रयासों का नेतृत्व किया।
- **राजनयिक संबंध:** औपचारिक राजनयिक संबंध 1993 में पुनर्स्थापित हुए।
 - ▲ 1997 की रेड फोर्ट घोषणा ने एक रणनीतिक साझेदारी की नींव रखी।
 - ▲ 2023 में इन संबंधों के 30 वर्ष पूरे हुए।
- **रक्षा और समुद्री सहयोग:** रक्षा सहयोग 1996 में शुरू हुआ।
 - ▲ भारत और दक्षिण अफ्रीका IBSAMAR (भारत-ब्राजील-दक्षिण अफ्रीका समुद्री अभ्यास) और MILAN जैसे संयुक्त नौसैनिक अभ्यास करते हैं।
 - ▲ दक्षिण अफ्रीका भारत-अफ्रीका रक्षा संवाद में भाग लेता है और भारत के IFC-IOR में संपर्क अधिकारी भी भेजता है।
- **राजनीतिक सहभागिता:** भारत और दक्षिण अफ्रीका नियमित रूप से BRICS, G20 और IBSA जैसे मंचों पर उच्च स्तरीय बैठकें करते हैं।

- ▲ राष्ट्रपति सिरिल रामाफोसा 2019 में भारत के गणतंत्र दिवस के मुख्य अतिथि थे।
- **व्यापार और निवेश:** 2023–24 में द्विपक्षीय व्यापार \$19.25 बिलियन तक पहुंच गया।
 - ▲ भारत वाहन, दवाइयाँ, चावल और रसायन निर्यात करता है।
 - ▲ वह दक्षिण अफ्रीका से सोना, कोयला, तांबे का अयस्क, फॉस्फोरिक एसिड और मैंगनीज आयात करता है।
 - ▲ भारत दक्षिण अफ्रीका के शीर्ष 10 व्यापारिक साझेदारों में शामिल है।
- **कौशल और शिक्षा सहयोग:** प्रिटोरिया में 2021 में गांधी-मंडेला विशेष प्रशिक्षण केंद्र की स्थापना की गई, जो कारीगरों को प्रशिक्षित करता है।
 - ▲ भारत दक्षिण अफ्रीकी पेशेवरों के लिए ITEC प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान करता है।
- **भारतीय प्रवासी:** दक्षिण अफ्रीका में 17 लाख भारतीय मूल की आबादी है। इनमें से अधिकांश क्वाज़ुलू-नटाल, गौतेंग और केप टाउन में रहते हैं।

आगे की राह

- भारत-दक्षिण अफ्रीका संबंध साझा इतिहास, आपसी सम्मान और समावेशी विकास की प्रतिबद्धता पर आधारित हैं।
- रक्षा, व्यापार, नवाचार और बहुपक्षीय मंचों में सहयोग को गहरा करके, भारत एवं दक्षिण अफ्रीका वैश्विक दक्षिण के लिए एक न्यायसंगत तथा समान विश्व के निर्माण में अग्रणी भूमिका निभा सकते हैं।

Source: IE

नीति आयोग ने सुदृढ़ डेटा इकोसिस्टम पर बल दिया

संदर्भ

- नीति आयोग ने आज अपनी त्रैमासिक इनसाइट्स श्रृंखला फ्यूचर फ्रंट के तीसरे संस्करण “भारत की डेटा अनिवार्यता: गुणवत्ता की ओर झुकाव” को जारी किया।

परिचय

- यह रिपोर्ट डिजिटल शासन को सुदृढ़ करने, सार्वजनिक विश्वास को बढ़ाने और कुशल सेवा वितरण सुनिश्चित करने के लिए सुदृढ़ डेटा गुणवत्ता की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित करती है।
- भारत की डिजिटल अवसंरचना (UPI, आधार, आयुष्मान भारत) ने व्यापक स्तर पर विस्तार किया है।
 - ▲ हालांकि, जैसे-जैसे ये प्लेटफॉर्म परिपक्व हो रहे हैं, डेटा की गुणवत्ता एक राष्ट्रीय आवश्यकता बन गई है।
 - ▲ एक छोटी सी गलती (गलत अंक, नाम में असंगति) गंभीर समस्याएं उत्पन्न कर सकती है: पेंशन रुकना, सब्सिडी गलत जगह पहुंचना, या कल्याणकारी योजनाओं की लागत बढ़ जाना।

मजबूत डेटा इकोसिस्टम की आवश्यकता

- **राजकोषीय रिसाव:** त्रुटियों और डुप्लीकेशन के कारण प्रत्येक 4–7% तक कल्याणकारी व्यय अतिरिक्त हो जाता है।
- **नीति विकृति:** असंगत या पुराना डेटा योजनाओं को गलत दिशा में ले जाता है और देरी करता है।
- **विश्वास में गिरावट:** रिकॉर्ड में असंगति और दावों की अस्वीकृति के कारण नागरिकों का विश्वास टूटता है।

पहचान की गई मुख्य चुनौतियाँ

- **प्रणालीगत डिज़ाइन दोष:** गति को सटीकता से अधिक प्राथमिकता दी जाती है।
- **विखंडन:** साइलो और असंगत फॉर्मेट एकीकरण में बाधा डालते हैं।
- **पुरानी प्रणालियाँ:** विरासत तकनीक में सत्यापन और ऑडिट ट्रेल्स की कमी है।
- **जवाबदेही की कमी:** डेटा की संरक्षकता स्पष्ट नहीं है।
- **जल्दबाज़ी में क्रियान्वयन:** मात्रात्मक लक्ष्य गुणवत्ता से समझौता करते हैं।
- **कम अपेक्षाएँ:** कई प्रणालियों में 80% सटीकता को “पर्याप्त” माना जाता है।

संरचनात्मक सिफारिशें

- **स्वामित्व को संस्थागत बनाना:** राष्ट्रीय/राज्य/जिला स्तर पर डेटा संरक्षक नियुक्त करें।
 - ▲ गुणवत्ता को साझा जिम्मेदारी बनाएं—कार्यक्रम प्रमुखों, आईटी टीमों और फील्ड स्टाफ के बीच।
 - ▲ डेटा की अखंडता बनाए रखने के लिए एकल उत्तरदायित्व बिंदु सुनिश्चित करें।
- **डेटा गुणवत्ता को प्रोत्साहित करना:** केवल गति नहीं, सटीकता और पूर्णता को भी पुरस्कृत करें।
 - ▲ त्रुटि दर, पूर्णता स्तर और समयबद्धता जैसे संकेतकों को ट्रैक करें।
 - ▲ इन्हें कार्यक्रम समीक्षा में केवल ऑडिट अनुपालन नहीं, बल्कि डिलीवरी की ताकत के रूप में शामिल करें।
- **इंटरऑपरेबिलिटी सुनिश्चित करना:** प्लेटफॉर्म, विभागों और समय सीमाओं के पार डेटा का सुरक्षित आदान-प्रदान सक्षम करें।
 - ▲ यह सार्वजनिक डेटा के मूल्य को बनाए रखने के लिए आवश्यक है।

आगे की राह: सांस्कृतिक बदलाव की आवश्यकता

- सरकार के सभी स्तरों पर डेटा संरक्षकता की संस्कृति को बढ़ावा दें।
- स्वच्छ, विश्वसनीय डेटा के महत्व को रेखांकित करने के लिए शीर्ष स्तर की प्रतिबद्धता दिखाएं।
- डेटा गुणवत्ता अब सार्वजनिक विश्वास, कुशल सेवा वितरण और भारत की एआई पारिस्थितिकी के लिए केंद्रीय है।

Source: LM

RBI और बैंक डिजिटल भुगतान इंटेलिजेंस प्लेटफॉर्म लॉन्च करेंगे (DPIP)

समाचार में

- प्रमुख सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के बैंक भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) के मार्गदर्शन में डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना (DPI) के रूप में डिजिटल भुगतान इंटेलिजेंस प्लेटफॉर्म (DPIP) विकसित करने के लिए सहयोग कर रहे हैं।

क्या आप जानते हैं?

- डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना (DPI) ऐसे बुनियादी डिजिटल सिस्टम होते हैं जो सुलभ, सुरक्षित एवं परस्पर-संगत होते हैं, और आवश्यक सार्वजनिक सेवाओं का समर्थन करते हैं।
- भारत में, DPI ने डिजिटल अर्थव्यवस्था को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जैसे पारंपरिक अवसंरचना ने औद्योगिक विकास में निभाई थी।

डिजिटल भुगतान इंटेलिजेंस प्लेटफॉर्म (DPIP)

- इसका उद्देश्य धोखाधड़ी जोखिम प्रबंधन को सुदृढ़ करना है, जिससे वास्तविक समय में डेटा साझा करने और खुफिया जानकारी एकत्र करने के ज़रिए डिजिटल लेनदेन में धोखाधड़ी का पता लगाया जा सके तथा उसे रोका जा सके।
- इसकी संस्थागत रूपरेखा सार्वजनिक और निजी बैंकों द्वारा संयुक्त रूप से विकसित की जा रही है, क्योंकि धोखाधड़ी को एक साझा खतरे के रूप में पहचाना गया है।
- रिजर्व बैंक इनोवेशन हब (RBIH) उन्नत तकनीकों का उपयोग करते हुए 5-10 बैंकों के साथ मिलकर एक प्रोटोटाइप तैयार कर रहा है।
- यह प्लेटफॉर्म आगामी कुछ महीनों में चालू होने की संभावना है।

आवश्यकता और उद्देश्य

- भारत में साइबर अपराध, विशेष रूप से डिजिटल वित्तीय धोखाधड़ी, एक बढ़ता हुआ खतरा है, जो लाखों लोगों को प्रभावित करता है और भारी वित्तीय हानि पहुंचाता है।
- RBI की FY25 रिपोर्ट के अनुसार, बैंक धोखाधड़ी में तीन गुना वृद्धि हुई है—₹12,230 करोड़ (FY24) से बढ़कर ₹36,014 करोड़ (FY25) हो गई।
- सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों ने ₹25,667 करोड़ की धोखाधड़ी (मुख्यतः ऋण/ऋण अग्रिम में) दर्ज की।
- निजी क्षेत्र के बैंकों में डिजिटल भुगतान (कार्ड/इंटरनेट) में सबसे अधिक धोखाधड़ी के मामले सामने आए।

- इसलिए DPIP भारत की बढ़ती डिजिटल वित्तीय प्रणाली को सुरक्षित करने की दिशा में एक सक्रिय कदम है।
- यह बढ़ती डिजिटल भुगतान धोखाधड़ी से निपटेगा तथा वास्तविक समय में डेटा साझा करने और खुफिया जानकारी एकत्र करने के ज़रिए धोखाधड़ी का पता लगाने और रोकथाम को बेहतर बनाएगा।

चुनौतियाँ

- धोखेबाज़ सामान्यतः पीड़ितों को प्रतिरूपण, बैंकिंग क्रेडेंशियल्स की फिशिंग या कार्ड विवरण चुराकर निशाना बनाते हैं, और फिर चुराए गए पैसे को कई खातों के माध्यम से घुमाकर पहचान से बचते हैं।
- जांच में प्रमुख चुनौतियाँ होती हैं जैसे रिपोर्टिंग में देरी, पीड़ितों द्वारा साक्ष्य मिटा देना, और वित्तीय संस्थानों से धीमा, असंरचित डेटा साझा करना।

अन्य संबंधित कदम

- सरकार, RBI और NPCI जैसे वित्तीय नियामकों के साथ मिलकर डिजिटल वित्तीय धोखाधड़ी से निपटने के लिए साइबर सुरक्षा को मजबूत कर रही है।
- गृह मंत्रालय (MHA) ने भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र (I4C) की स्थापना की और साइबर अपराधों की सार्वजनिक रिपोर्टिंग के लिए राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल शुरू किया, जो मामलों को संबंधित कानून प्रवर्तन एजेंसियों तक पहुंचाता है।
- 'सिटीजन फाइनेंशियल साइबर फ्रॉड रिपोर्टिंग एंड मैनेजमेंट सिस्टम' ने 13.36 लाख शिकायतों से लगभग ₹4386 करोड़ की राशि बचाने में सहायता की है।
- RBI ने डिजिटल भुगतान के लिए सुरक्षा नियंत्रणों को अनिवार्य करते हुए 'म्यूल्हंट' नामक एक AI टूल प्रस्तुत किया है, जो मनी म्यूल्स का पता लगाता है।
- NPCI ने UPI लेनदेन के लिए डिवाइस बाइंडिंग, दो-कारक प्रमाणीकरण, लेनदेन सीमा और AI-आधारित धोखाधड़ी निगरानी जैसे सुरक्षा उपाय लागू किए हैं।

सुझाव और आगे की राह

- भारत में वित्तीय धोखाधड़ी से निपटने के लिए तकनीक, नियामक सुधार, तेज़ डेटा साझा करना और जन जागरूकता जैसे संयुक्त प्रयासों की आवश्यकता है।

- बैंकों, फिनटेक कंपनियों, कानून प्रवर्तन और उपभोक्ताओं के बीच सहयोग आवश्यक है ताकि डिजिटल वित्तीय प्रणाली की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके और एक सुरक्षित, विश्वसनीय वातावरण बनाया जा सके।
- प्रमुख रोकथाम उपायों में शामिल हैं—मल्टी-डिवाइस लॉगिन अलर्ट, बैंकिंग ऐप्स पर स्क्रीन-शेयरिंग को अक्षम करना, और स्पष्ट, विस्तृत बैंक स्टेटमेंट को अनिवार्य करना।

Source :TH

वैश्विक सतत विकास लक्ष्य रैंकिंग में भारत शीर्ष 100 में पहुंचा

संदर्भ

- भारत ने प्रथम बार सतत विकास लक्ष्यों (SDG) सूचकांक में शीर्ष 100 देशों में स्थान प्राप्त किया है।

परिचय

- सतत विकास रिपोर्ट (SDR) 2015 में 193 संयुक्त राष्ट्र सदस्य देशों द्वारा अपनाए गए सतत विकास लक्ष्यों पर प्रत्येक वर्ष हुई प्रगति की समीक्षा करती है।
- इस संस्करण में प्रथम बार यह आकलन भी शामिल है कि किन देशों ने SDG पर सबसे अधिक प्रगति की है, जिसे एक प्रमुख SDG सूचकांक (SDGi) के माध्यम से मापा गया है।

मुख्य विशेषताएँ

- **स्वैच्छिक राष्ट्रीय समीक्षा (VNR) के माध्यम से वैश्विक प्रतिबद्धता:** 2030 एजेंडा को अपनाने के बाद से 193 में से 190 UN सदस्य देशों ने VNR प्रक्रिया में भाग लिया है।
- **SDG प्रगति में क्षेत्रीय प्रवृत्तियाँ:** 2015 से पूर्वी और दक्षिण एशिया सबसे तेज़ी से प्रगति करने वाला क्षेत्र रहा है।
 - ✦ **प्रगति के प्रेरक तत्व:** सामाजिक-आर्थिक संकेतकों में तेज़ सुधार।
- **SDG सूचकांक में शीर्ष प्रदर्शनकर्ता:** फिनलैंड, स्वीडन और डेनमार्क शीर्ष तीन स्थानों पर हैं।

- श्रीर्ष 20 में से 19 देश यूरोप के हैं।
- यहां तक कि श्रीर्ष देशों के लिए भी जलवायु कार्रवाई और जैव विविधता लक्ष्यों में चुनौतियाँ बनी हुई हैं।
- भारत 167 देशों में से 99वें स्थान पर है।
 - SDG सूचकांक में भारत का स्कोर 67 है, जो 2024 में 109वें स्थान से एक महत्वपूर्ण सुधार है।
 - SDG को अपनाने के बाद से भारत ने निरंतर अपनी स्थिति में सुधार किया है: 2023 में 112वां, 2022 में 121वां और 2021 में 120वां स्थान।



2015 से अब तक पाँच क्षेत्रों में उल्लेखनीय गिरावट देखी गई:

- मोटापे की दर (SDG 2)
- प्रेस की स्वतंत्रता (SDG 16)
- सतत नाइट्रोजन प्रबंधन (SDG 2)
- जैव विविधता हानि को मापने वाला रेड लिस्ट सूचकांक (SDG 15)
- भ्रष्टाचार धारणा सूचकांक (SDG 16)
- संयुक्त राष्ट्र आधारित बहुपक्षीयता सूचकांक (UN-Mi): बारबाडोस प्रथम स्थान पर है — UN आधारित बहुपक्षीयता के प्रति सबसे अधिक प्रतिबद्ध।
 - संयुक्त राज्य अमेरिका अंतिम स्थान पर है, क्योंकि उसने 2025 में पेरिस जलवायु समझौते से हटने, विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) से बाहर होने और SDG व एजेंडा 2030 का औपचारिक विरोध करने जैसे कदम उठाए।
- विकासशील देशों में वित्तीय बाधाएँ: लगभग 50% वैश्विक जनसंख्या ऐसे देशों में रहती है जिनके पास सतत विकास में निवेश करने की वित्तीय क्षमता नहीं है।
 - जलवायु संरक्षण, वैश्विक स्वास्थ्य और शांति जैसे वैश्विक सार्वजनिक हितों को अभी भी पर्याप्त वित्तीय सहायता नहीं मिल रही है।
- सिफारिशें
 - वैश्विक वित्तीय संरचना (GFA) में सुधार की आवश्यकता: वर्तमान GFA अमीर देशों को पूंजी तक आसान पहुंच प्रदान करता है।
 - SDG और सार्वजनिक हितों की दिशा में वैश्विक वित्तपोषण को बढ़ावा देने और संरेखित करने के लिए व्यावहारिक सुधारों का प्रस्ताव दिया गया है।
- भारत के पड़ोसी देशों में रैंकिंग: चीन 49वें (74.4), भूटान 74वें (70.5), नेपाल 85वें (68.6), बांग्लादेश 114वें (63.9), और पाकिस्तान 140वें (57) स्थान पर हैं।
 - समुद्री पड़ोसी देशों में मालदीव और श्रीलंका क्रमशः 53वें और 93वें स्थान पर हैं।
- वैश्विक SDG प्रगति अभी भी निर्धारित मार्ग पर नहीं: वर्तमान में 17 में से कोई भी SDG वैश्विक स्तर पर 2030 तक प्राप्त होने की दिशा में नहीं है।
 - विश्व भर में केवल 17% SDG लक्ष्य ही ट्रैक पर हैं।
 - मुख्य बाधाएँ: संघर्ष, संरचनात्मक कमजोरियाँ, सीमित वित्तीय संसाधन।
- जहाँ उल्लेखनीय प्रगति देखी गई:
 - SDG 3 (स्वास्थ्य): 5 वर्ष से कम आयु के बच्चों और नवजात शिशुओं की मृत्यु दर में कमी।
 - SDG 7: बिजली की पहुंच।
 - SDG 9: मोबाइल ब्रॉडबैंड उपयोग और इंटरनेट पहुंच।

सतत विकास लक्ष्य (SDGs)

- **स्वीकृति:** संयुक्त राष्ट्र महासभा ने अपनी 70वीं बैठक (2015) में “हमारे विश्व में बदलाव: सतत विकास के लिए 2030 एजेंडा” नामक दस्तावेज़ को अपनाया।
 - ▲ इस दस्तावेज़ में 17 सतत विकास लक्ष्य (SDGs) और 169 संबंधित लक्ष्य शामिल हैं।
- **प्रभावी तिथि:** SDG को 1 जनवरी 2016 से लागू किया गया।
- **उद्देश्य:** SDG एक समग्र खाका प्रदान करते हैं जिसका उद्देश्य सभी के लिए एक बेहतर और अधिक सतत भविष्य प्राप्त करना है।
- ये लक्ष्य गरीबी, असमानता, जलवायु परिवर्तन, पर्यावरणीय क्षरण, शांति और न्याय जैसी वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए कार्रवाई का आह्वान करते हैं।
- **प्रयोज्यता:** SDG सार्वभौमिक हैं — ये विकसित, विकासशील और सबसे कम विकसित सभी देशों पर लागू होते हैं। 2030 तक इन लक्ष्यों और लक्ष्यों को लागू करने में हुई प्रगति की निगरानी और समीक्षा करने की प्राथमिक जिम्मेदारी देशों की है।
- **कानूनी स्थिति:** SDG कानूनी रूप से बाध्यकारी नहीं हैं, लेकिन वे प्रभावी रूप से अंतरराष्ट्रीय दायित्व बन गए हैं और देशों में घरेलू व्यय प्राथमिकताओं को पुनः निर्देशित करने की क्षमता रखते हैं।
 - ▲ देशों से अपेक्षा की जाती है कि वे इन लक्ष्यों की निगरानी के लिए एक राष्ट्रीय ढांचा विकसित करें और स्वामित्व लें।



Source: TH

जलवायु वित्त

संदर्भ

- भारत ने जर्मनी के बॉन में चल रही जलवायु वार्ताओं में विकासशील देशों के बीच एक मुखर नेता के रूप में उभरते हुए जलवायु वित्त दायित्वों पर बहस को फिर से जीवंत कर दिया है।

बॉन जलवायु परिवर्तन सम्मेलन

- इसे औपचारिक रूप से UNFCCC सहायक निकायों के सत्र (SB62) के रूप में जाना जाता है, जो प्रत्येक वर्ष जर्मनी के बॉन में आयोजित होता है।
- यह सम्मेलन लगभग 200 देशों के प्रतिनिधियों को तकनीकी वार्ताओं को आगे बढ़ाने और वर्ष के अंत में होने वाले COP शिखर सम्मेलन के लिए आधार तैयार करने हेतु एकत्र करता है।

मुख्य फोकस क्षेत्र

- अनुकूलन पर वैश्विक लक्ष्य (GGA) के लिए संकेतकों को अंतिम रूप देना
- न्यायसंगत संक्रमण कार्य कार्यक्रम को आगे बढ़ाना
- जलवायु वित्त को बढ़ाना, जिसमें \$1.3 ट्रिलियन रोडमैप पर चर्चा शामिल है
- पारदर्शिता प्रणालियों और जलवायु डेटा विनिमय को सुदृढ़ करना
- राष्ट्रीय रूप से निर्धारित योगदान (NDCs) और पेरिस समझौते के अनुच्छेद 6 तंत्र की प्रगति की समीक्षा करना

जलवायु वित्त के बारे में

- यह स्थानीय, राष्ट्रीय या अंतरराष्ट्रीय वित्त पोषण को संदर्भित करता है — जो सार्वजनिक, निजी और वैकल्पिक स्रोतों से आता है — और जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए शमन और अनुकूलन कार्यों का समर्थन करता है।
- यह “साझा लेकिन विभेदित जिम्मेदारियों” (CBDR) के सिद्धांत पर आधारित है, जो मान्यता देता है कि विकसित देशों को कम संसाधनों और अधिक संवेदनशीलता वाले देशों को वित्तीय सहायता प्रदान करनी चाहिए।

जलवायु वित्त का रोडमैप

- COP29 (बाकू) में वैश्विक समुदाय ने जलवायु वित्त पर नए सामूहिक परिमाणित लक्ष्य (NCQG) के हिस्से के रूप में बाकू से बेलें रोडमैप (B2B रोडमैप) को अपनाया।
- इसका उद्देश्य 2035 तक जलवायु वित्त को \$1.3 ट्रिलियन प्रति वर्ष तक बढ़ाना है, जो 2009 में किए गए \$100 बिलियन वार्षिक वादे से एक बड़ा कदम है।
- 1992 की रियो घोषणा ने “प्रदूषक भुगतान करे” सिद्धांत को औपचारिक रूप से प्रस्तुत किया।

जलवायु वित्त क्यों आवश्यक है?

- **अनुकूलन अंतर को समाप्त करना:** अनुकूलन को शमन की तुलना में कम वित्तीय सहायता मिलती है।
 - ▲ विकासशील देशों को जलवायु-लचीला अवसंरचना, स्मार्ट कृषि और पूर्व चेतावनी प्रणालियों के लिए वित्तीय सहायता की आवश्यकता है।
- **बड़े पैमाने पर शमन को सक्षम बनाना:** स्वच्छ ऊर्जा की ओर संक्रमण, ऊर्जा दक्षता में सुधार और परिवहन व उद्योग जैसे क्षेत्रों में उत्सर्जन में कटौती के लिए बड़े निवेश की आवश्यकता है।
 - ▲ जलवायु वित्त के बिना, कई विकासशील देश पेरिस समझौते के अंतर्गत अपने NDCs को पूरा नहीं कर सकते।
- **न्याय और समानता को संबोधित करना:** विकसित देश, जो ऐतिहासिक रूप से अधिकांश उत्सर्जन के लिए जिम्मेदार हैं, उन्हें उन देशों का समर्थन करना चाहिए जिन्होंने कम योगदान दिया लेकिन सबसे अधिक प्रभावित हो रहे हैं।

प्रमुख चिंताएँ विकासशील देशों के लिए:

- **संप्रभुता और शर्तें:** भारत सहित विकासशील देशों ने वित्त पोषण में बाहरी शर्तें लागू किए जाने पर चिंता व्यक्त की है।
 - ▲ G77 और चीन समूह ने ज़ोर दिया कि जलवायु वित्त को राष्ट्रीय प्राथमिकताओं का सम्मान करना चाहिए।
- **प्रावधान से जुटाव की ओर बदलाव:** भारत ने समान विचारधारा वाले विकासशील देशों (LMDCs) की ओर से बोलते हुए दोहराया कि जलवायु वित्त एक कानूनी दायित्व है, निवेश का अवसर नहीं।

- **अनुकूलन बनाम शमन असंतुलन:** नवीकरणीय ऊर्जा जैसी शमन परियोजनाओं को अधिक वित्तीय सहायता मिलती है, जबकि अनुकूलन प्रयासों को कम।
 - ▲ इससे वैश्विक दक्षिण के संवेदनशील समुदायों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।
- **विकसित देशों के लिए:**
 - ▲ **दानदाता आधार का विस्तार:** कुछ विकसित देश तर्क देते हैं कि चीन और खाड़ी देशों जैसी उभरती अर्थव्यवस्थाओं को भी जलवायु वित्त में योगदान देना चाहिए।
 - ▲ **निजी क्षेत्र पर निर्भरता:** विकसित देश निजी क्षेत्र द्वारा संचालित वित्त को बढ़ावा दे रहे हैं, जिससे पारदर्शिता, समानता और सार्वजनिक हित के साथ संरेखण पर चिंता बढ़ रही है।

भारत का जलवायु वित्त परिदृश्य

- **वैश्विक समर्थन:** भारत ने लगातार पेरिस समझौते के अनुच्छेद 9.1 के अंतर्गत विकसित देशों की कानूनी जिम्मेदारी पर बल दिया है।
- **प्राप्त वित्त:** भारत को UN तंत्रों के माध्यम से लगभग 1.16 बिलियन अमेरिकी डॉलर का जलवायु वित्त प्राप्त हुआ है — जिसमें ग्रीन क्लाइमेट फंड, ग्लोबल एनवायरनमेंट फैसिलिटी और अनुकूलन कोष शामिल हैं।
- **घरेलू वित्त पोषण:** भारत की अधिकांश जलवायु कार्रवाई — जैसे बड़े पैमाने पर नवीकरणीय ऊर्जा तैनाती और अनुकूलन कार्यक्रम — घरेलू संसाधनों से वित्तपोषित होती है।
- **भारत और अनुकूलन:** आर्थिक सर्वेक्षण 2024-25 में राष्ट्रीय अनुकूलन योजना (NAP) के विकास और UNFCCC को प्रारंभिक अनुकूलन संप्रेषण (IAC) प्रस्तुत करने को रेखांकित किया गया है। इसमें शामिल हैं:
 - ▲ प्रत्येक बीज और मृदा स्वास्थ्य के माध्यम से जलवायु-लचीली कृषि
 - ▲ राष्ट्रीय सतत आवास मिशन (NMSH) के माध्यम से शहरी अनुकूलन

- AMRUT योजना के अंतर्गत जल निकायों का पुनरुद्धार, जिसमें 3,000 से अधिक परियोजनाएँ स्वीकृत की गई हैं।

Source: IE

संक्षिप्त समाचार

अनंतपद्मनाभ मंदिर में 15वीं शताब्दी के प्राचीन दीपक की खोज

समाचार में

- हाल ही में, कर्नाटक के अनंतपद्मनाभ मंदिर में 15वीं शताब्दी का एक प्राचीन दीपक खोजा गया है।

अनंतपद्मनाभ मंदिर में 15वीं शताब्दी का प्राचीन दीपक

- अनंतपद्मनाभ मंदिर कर्नाटक के उडुपी ज़िले के पेदूरू में स्थित है।
- यह प्राचीन दीपक एक अद्वितीय कलाकृति है जिसमें दुर्लभ शैव और वैष्णव मूर्तिकला शामिल है, जो दोनों संप्रदायों की धार्मिक परंपराओं को प्रदर्शित करती है।
- मंदिर के आंतरिक प्राकार में स्थित एक शिलालेख के अनुसार, यह दीपक 1456 ईस्वी में बसवन्नारस बंग नामक व्यक्ति द्वारा दान किया गया था।
- इस दीपक में पुराण कथाओं को दर्शाने वाले दो उकेरे हुए मुख हैं:
 - प्रथम मुख (शैव विषय):** इसमें भगवान शिव को नटराज के रूप में प्रलय तांडव (विनाशकारी नृत्य) करते हुए दिखाया गया है, जिनके साथ पार्वती, गणपति, बृंगी, खड्ग रावण (प्रतीकात्मक हथियारों और खोपड़ी के साथ), और मयूर पर सवार कुमार भी दर्शाए गए हैं।
 - द्वितीय मुख (वैष्णव विषय):** इसमें ब्रह्मा, इंद्र, अनंतपद्मनाभ (चम्मच और शंख धारण किए हुए), अग्नि और वरुण को समभंग मुद्रा में दर्शाया गया है।
 - यह दृश्य दर्शाता है कि कैसे भगवान शिव के विनाशकारी नृत्य से भयभीत देवता भगवान अनंतपद्मनाभ की शरण में जाते हैं, जो फिर शिव को शांत करते हैं।

- दीपक के आधार पर गरुड़ को केंद्र में खड़ा दिखाया गया है, और पीछे भगवान शिव को शांत, प्रार्थनारत मुद्रा में दर्शाया गया है।
- खड्ग रावण देवी मारी पर बैठे हुए दिखाए गए हैं, जिन्हें आज भी एक शक्तिशाली स्थानीय देवी के रूप में पूजा जाता है।
 - यह दीपक एक दुर्लभ और महत्वपूर्ण सांस्कृतिक एवं धार्मिक धरोहर माना जा रहा है।

Source :TH

उन्नत रॉक अपक्षय (ERW) तकनीक

समाचार में

- एन्हांस्ट रॉक वेदरिंग (ERW) विधि को तेजी से अपनाया जा रहा है क्योंकि टेक कंपनियाँ, एयरलाइंस और फैशन ब्रांड अपने उत्सर्जन की भरपाई के लिए ERW परियोजनाओं से कार्बन क्रेडिट खरीदने की दिशा में अग्रसर हैं, जिससे यह एक संभावित लाभकारी व्यवसाय बनता जा रहा है।
- ERW परियोजनाएँ वैश्विक स्तर पर, भारत, ब्राजील और अमेरिका सहित, चल रही हैं और निवेशकों की भारी रुचि आकर्षित कर रही हैं।

एन्हांस्ट रॉक वेदरिंग (ERW)

- यह जलवायु परिवर्तन को कम करने की एक तकनीक है जो प्राकृतिक अपWeathering प्रक्रिया को तीव्र करती है, जिसमें बेसाल्ट जैसे शीघ्र अपक्षयशील चट्टानों को बारीक पीसकर खेतों में फैलाया जाता है।
- यह प्रक्रिया वायुमंडल से कार्बन डाइऑक्साइड को स्थिर रूपों जैसे बाइकार्बोनेट और चूना पत्थर में परिवर्तित करके पकड़ने में सहायता करती है।
- यह मृदा स्वास्थ्य में सुधार और अम्लीय बहाव को निष्क्रिय करके संभावित रूप से डाउनस्ट्रीम CO₂ उत्सर्जन को रोकने जैसे अतिरिक्त लाभ भी प्रदान करती है।

जोखिम

- एन्हांस्ट रॉक वेदरिंग (ERW) को सामान्यतः सुरक्षित माना जाता है क्योंकि यह एक प्राकृतिक प्रक्रिया को

तीव्र करता है, लेकिन कुछ चट्टानों में विषैले भारी धातु हो सकते हैं, और बारीक चट्टान की धूल को संभालने के लिए सुरक्षात्मक उपकरणों की आवश्यकता होती है।

- मुख्य चिंता कार्बन कैप्चर के गलत मापन को लेकर है, जिससे कार्बन क्रेडिट का अधिक अनुमान लगाया जा सकता है।
- यदि कंपनियाँ बढ़ा-चढ़ाकर बताए गए ERW आँकड़ों के आधार पर उत्सर्जन की भरपाई करती हैं, तो इससे वायुमंडलीय CO₂ में शुद्ध वृद्धि हो सकती है।

Source: TH

संसद की लोक लेखा समिति(PAC)

समाचार में

- संसद की लोक लेखा समिति (PAC) ने केंद्रीय सरकार स्वास्थ्य योजना (CGHS) की आलोचना की है कि उसने सेवाओं में सुधार के लिए बार-बार दी गई सिफारिशों की अनदेखी की, विशेष रूप से पुरानी दवा खरीद नीति के संबंध में।

केंद्रीय सरकार स्वास्थ्य योजना (CGHS)

- CGHS योजना की शुरुआत 1954 में की गई थी, जिसका उद्देश्य केंद्रीय सरकार के कर्मचारियों — सेवारत और पेंशनभोगी दोनों — उनके आश्रित परिवार के सदस्यों और सरकार द्वारा अधिसूचित अन्य CGHS कार्डधारकों को समग्र चिकित्सा देखभाल प्रदान करना है।

लोक लेखा समिति (PAC) के बारे में

- **शुरुआत:** लोक लेखा समिति की स्थापना पहली बार 1921 में मोंटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधारों के तहत की गई थी।
 - ▲ यह भारत की एक प्रमुख संसदीय समिति है, जो सरकार की राजस्व और व्यय की लेखा परीक्षा के लिए जिम्मेदार होती है।
- **संरचना:** इसमें कुल 22 सदस्य होते हैं — 15 लोकसभा से और अधिकतम 7 राज्यसभा से — जिन्हें आनुपातिक प्रतिनिधित्व के आधार पर प्रतिवर्ष चुना जाता है।
 - ▲ सदस्य मंत्री नहीं हो सकते, और अध्यक्ष की नियुक्ति लोकसभा अध्यक्ष द्वारा की जाती है।

▲ सदस्यों का कार्यकाल एक वर्ष का होता है।

- **कार्यक्षेत्र:** यह सुनिश्चित करती है कि संसद द्वारा स्वीकृत सार्वजनिक धन का उपयुक्त उपयोग हो रहा है और नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (C&AG) की लेखा परीक्षा रिपोर्टों की समीक्षा करती है।
 - ▲ जांच के दौरान C&AG समिति की सहायता करता है।
 - ▲ यह कार्यपालिका पर निगरानी रखने का कार्य करती है और संसद की निगरानी भूमिका को सुदृढ़ करती है।

Source :TH

EPFO ऑटो क्लेम सीमा 1 लाख रुपये से बढ़ाकर 5 लाख रुपये की गई

संदर्भ

- कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (EPFO) ने अग्रिम दावों के लिए ऑटो-सेटलमेंट सीमा को ₹1 लाख से बढ़ाकर ₹5 लाख कर दिया है।

परिचय

- ऑटो-सेटलमेंट सुविधा की शुरुआत कोविड-19 के दौरान की गई थी ताकि EPF अग्रिम राशि का त्वरित वितरण सुनिश्चित किया जा सके।
 - ▲ यह सुविधा सदस्यों को चिकित्सा उपचार, विवाह, आवास या शिक्षा जैसे उद्देश्यों के लिए त्वरित रूप से धन प्राप्त करने में सहायता करती है।

कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (EPFO)

- EPFO श्रम और रोजगार मंत्रालय के अंतर्गत एक वैधानिक निकाय है।
 - ▲ यह कर्मचारी भविष्य निधि और विविध उपबंध अधिनियम, 1952 का प्रशासन करता है।
- **उद्देश्य**
 - ▲ सेवानिवृत्ति के बाद कर्मचारियों की वित्तीय सुरक्षा और सामाजिक कल्याण सुनिश्चित करना।
 - ▲ कर्मचारियों के बीच स्वैच्छिक बचत को बढ़ावा देना।

- ▲ भविष्य निधि, पेंशन और बीमा योजनाओं को विनियमित और पर्यवेक्षण करना।

Source: BS

कैंडिडा ट्रॉपिकलिस

संदर्भ

- 'कैंडिडा ट्रॉपिकलिस' ने सामान्य एंटी-फंगल दवाओं जैसे फ्लुकोनाज़ोल और वोरिकोनाज़ोल के प्रति प्रतिरोध विकसित करने के लिए गुणसूत्रीय परिवर्तन का उपयोग किया है।

परिचय

- कैंडिडा ट्रॉपिकलिस एक फंगल रोगजनक है जो विशेष रूप से भारत में गंभीर संक्रमण का कारण बनता है।
- यह उच्च मृत्यु दर (55–60%) से जुड़ा हुआ है।
- इसका उपचार सामान्यतः फ्लुकोनाज़ोल और वोरिकोनाज़ोल जैसी एंटी-फंगल दवाओं से किया जाता है।
- हाल ही में दवा-प्रतिरोधी संक्रमणों में वृद्धि ने एक गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य चिंता को जन्म दिया है।

एंटी-फंगल दवाएँ

- एंटी-फंगल दवाएँ वे औषधियाँ हैं जो मनुष्यों, जानवरों और पौधों में फंगल संक्रमण (मायकोसिस) के उपचार के लिए उपयोग की जाती हैं।
- ये दवाएँ फंगस की कोशिका भित्ति या झिल्ली को लक्षित करती हैं, या डीएनए/आरएनए संश्लेषण में हस्तक्षेप करती हैं।

Source: TH

नोवो नॉर्डिस्क का वेगोवी

संदर्भ

- डेनमार्क की फार्मा कंपनी नोवो नॉर्डिस्क ने भारत में अपनी वजन घटाने वाली दवा 'वेगोवी' को सप्ताह में एक बार लगाए जाने वाले इंजेक्शन के रूप में लॉन्च किया है।

परिचय

- इस दवा के डिलीवरी डिवाइस में चार खुराकें होंगी।
- 0.25 मि.ग्रा., 0.5 मि.ग्रा. और 1 मि.ग्रा. की खुराक की कीमत ₹17,345 प्रति माह होगी, जिसका साप्ताहिक व्यय लगभग ₹4,366 होगा।
- वेगोवी सेमाग्लूटाइड से बनी है, जो एक GLP-1A रिसेप्टर एगोनिस्ट है। यह शरीर में स्वाभाविक रूप से बनने वाले हार्मोन GLP-1 की नकल करता है, जो रक्त शर्करा को नियंत्रित करने, भूख को कम करने और गैस्ट्रिक खाली होने की प्रक्रिया को धीमा करने के लिए उत्तरदायी होता है।
- यह दवा वजन घटाने के लिए अनुमोदित है, लेकिन केवल उन्हीं लोगों के लिए जिनका वजन एक निश्चित सीमा से अधिक है, जिसे 'गंभीर मोटापा' (morbid obesity) कहा जाता है।
 - ▲ गंभीर मोटापा (Morbid Obesity) इसे क्लास III मोटापा भी कहा जाता है, जो मोटापे का एक गंभीर और जीवन के लिए खतरा उत्पन्न करने वाला रूप है।
 - ▲ इसकी परिभाषा है: बॉडी मास इंडेक्स (BMI) ≥ 40 किग्रा/मी²।
- अध्ययनों से पता चला है कि वेगोवी लेने वाले लोगों ने औसतन अपने शरीर के वजन का लगभग 15% तक घटाया है।

Source: IE

